22 April
PG Sem-II

अध्याय - 5

सामाजिक गतिशीलता एवं परिवर्तन
(Social Mobility and change)

1. **ईसाई (Christianity)** :— हिन्दू धर्म और हिन्दूवीकरण के बाद ईसाई धर्म का प्रभाव भारत की जनजातियों के बीच पर सांस्कृतिकरण सम्बन्धी अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। ईसाई धर्म के विस्तार और प्रभाव के बीच भारत में ब्रिटिश उपनिवेशिक शासन की स्थापना में तलाशी जा सकते हैं। जिसके फलस्वरूप जनजातिय क्षेत्रों खास कर उत्तरी - पूर्वी हिस्से एवं बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा तथा बंगाल के विभिन्न हिस्सों में मिशनरी संगठनो और गिरजाघरों की स्थापना हुई। एक तरफ इन मिशनों ने धर्म का प्रचार - प्रसार किया तो दूसरी तरफ उन्होंने शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे समाज सेवा के क्षेत्र में विस्तृत प्रणाली की नींव भी डाली। इस तरह ईसाई धर्म जनजातिय क्षेत्रों में जन कल्याण का प्राचीनतम क्षेत्र स्वरूप है।

ईसाई धर्म के भारत आगमन ने निसंदेह जनजातिय लोगों में इस हद तक आत्म विश्वास के भाव का संचार कर दिया कि वे आत्म सम्मान के साथ नई दुनिया का सामना कर सकते थे। परन्तु साथ ही इसने उनके सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में कई प्रकार की जटिलताओं का भी सूत्रपात कर दिया इसने जनजातिय समाजों को अनेक हिस्सों में बाँट दिया और ये विभाजन जहाँ कहीं सफलता पूर्वक बरकरार रह पाये, वहाँ लम्बवत रूप में थे। उदाहरण स्वरूप मेघालय के 'खासी' ईसाई और गैर ईसाई खासीयों के रूप में विभक्त थे। जहाँ कहीं ईसाई खासी बहुसंख्यक थे वे एक प्रमुख और सम्पर्क समुदाय बन गये। परन्तु जिन स्थानों में कम संख्या में थे वहाँ वे गैर धर्मातिवन्तरियों के दबाव को नही झेल पाये और उन्हे बाहरी केन्द्रों में जाने के लिए विवश होना पड़ा। यह स्वयं को धर्म

Page No.

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

परिवर्तन के अनुमानों को पूरी तरह जोड़ देना है। ईसाई धर्म परिवर्तन की गति ने परसांस्कृतिकरण की प्रक्रिया में अनेक बाधाएँ पैदा कर दी। जब कोई जनजातिय समूह हिन्दुत्वीकरण की प्रक्रिया के प्रति आकृष्ट हुआ तो यह प्रक्रिया धीमी रही और परिवर्तन अचानक नहीं हो पाया। इस हिन्दुत्वीकरण के साथ-साथ जनजातिय विश्वास और त्योहार व्यवहार जारी रहे, परन्तु ईसाई धर्म स्वीकार करने के कारण अतीत से अचानक अलगाव की स्थिति देखने में आयी। अनेक पारम्परिक जनजातिय विश्वास और प्रचलित व्यवहार उपेक्षित हो गई। यह उन्हें त्याग दिया गया। जब हम ईसाई धर्म स्वीकार करने के बाद जनजातियों में सांस्कृतिक परिवर्तन के विविध पक्षों पर दृष्टि डालते है, तो बात सामने आती है। कि ईसाई धर्म के प्रसार ने व्यक्तिगत या निजी सम्पति पर अधिकार और पितृसत्तात्मक परिवार को प्रोत्साहित किया तथा युवागृह और अनेक पारम्परिक संस्थाओं को समाप्त कर दिया।

कुछ निश्चित स्थितियों में जनजातिय लोगों ने ईसाई धर्म को विद्रोह के प्रति अथवा हिन्दू जमीनदारों, महाजनों तथा व्यापारियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में अपनाया। कोल विद्रोह 1832 और छोटानागपुर क्षेत्र और उसके आस-पास ईसाई धर्म के प्रसार को इस संदर्भ में विचारनीय दृष्टान्त माना जा सकता है। ईसाई धर्म अनेक जनजातिय समुदायों और क्षेत्रों में पश्चिमीकरण का प्राचीनतम स्रोत भी रहा है। अनेक ईसाई जनजातिय समुदायों में एक नयी और पश्चात्य किस्म की जीवन शैली का शुभारम्भ हुआ है। जिसकी मुख्य विशेषताएँ है:- पश्चिमी शैली के परिधान, टेबल-कुर्सी पर बैठकर भोजन करना और पश्चात्य वेश-भूषा में सजना हर रविवार को गिरजाघर जाना। सौंदर्य प्रसाधन द्रव, साबुन, सैम्पू का इस्तेमाल तथा पश्चिमी संगीत के प्रति रुचि भी ईसाई जनजातियों वाले अनेक क्षेत्रों में दिखाई देती है।

Page No.